संपादक के नाम पत्र

संजय शर्मा इलाहाबाद

समाज की भलाई के लिए कारोबार करने वाले संगठनों के बारे में अच्छी जानकारी देने के लिए धन्यवाद। यदि समाज के कमज़ोर वर्गों को उचित दर पर ज़रूरी चीज़ें मुहैया कराने का यह रुझान जोर पकड़े तो समाज को एक नई दिशा मिल सकती है और हम सिर्फ पूंजी का वर्चस्व कायम होने के बजाय मानव मूल्यों को बचाने की सोच सकते हैं। स्पैन से समाज को नई दिशा में सोचने को प्रेरित करने वाले इसी तरह के लेखों की उम्मीद है।

स्वर्ण लता नरूला नई दिल्ली

स्पैन के सितंबर-अक्टूबर अंक में प्रकाशित सभी लेख सशक्त हैं। दिलीप डिसूज़ा का आलेख ''न्यू यॉर्क: हर मोड़ पर कुछ कहता है'' अत्यधिक प्रभावशाली है। न्यू यॉर्क के बारे में कहा जाता है कि वहां देखने लायक इतना कुछ है कि आपकी इंद्रियां थक जाएं। स्पैन का हर लेख हमारे ज्ञान में वृद्धि करता है और जानकारियों के द्वार खोलता है।

बोथरा आज़ाद सिंह बेंगलूर

अमेरिका-भारत उच्च शिक्षा और सच्ची शिक्षा लेख काफी पसंद आए। इससे मुझे शिक्षा क्षेत्र से संबंधित बहुत सी जानकारियां मिलीं। विश्व नागरिक बनते युवा और इंटरनेट पर शिक्षा का खजाना लेख भी सराहनीय हैं। स्पैन से हमें अमेरिका में हो रही अच्छी चीज़ों की जानकारी मिलती है ओर हम चाहते हैं कि उन पर भारत में भी अमल हो।

मोहिंदर पाल लुधियाना

सितंबर-अक्टूबर 2007 के अंक में शिक्षा से संबंधित लेखों ने सबसे ज़्यादा आकर्षित किया। उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका जाने की ख्वाहिश रखने वाले छात्रों के लिए यह अंक बहुत ही जानकारीपूर्ण रहा। इसके अलावा अमेरिकी विश्वविद्यालयों के बारे में अमेरिकी और भारतीय छात्रों के अनुभव जानना भी दिलचस्प रहा। कोका कोला के बारे में प्रकाशित लेख भी रोचक था। यह जानकारी दिलचस्प थी कि किस तरह कोका कोला ने लंबे समय तक अपने उत्पाद की कीमत नहीं बढ़ाई।

मोहित जैन जोधपुर

भामी वी. शेनॉय का आलेख ''सच्ची शिक्षा'' बहुत ही प्रेरणास्पद है। ग्रामीण बच्चों के जीवन में तब्दीली का उनका प्रयास अनूठा है जो और लोगों को भी इसी तरह के प्रयोग करने को प्रेरित करेगा। अलग-अलग क्षेत्रों में बढ़िया काम कर रहे लोगों के अनुभवों को विभिन्न समुदायों के साथ बांटना बहुत ज़रूरी है। इससे एक समूह द्वारा किए जा रहे बढ़िया काम से अन्य लोग भी कुछ सीख सकते हैं।

शिशिर कुमार नियोगी कोलकाता

बहुत से अन्य विकासशील देशों की तरह भारत भी रहन-सहन के बेहतर स्तर के लिए प्रयास कर रहा है। इसी कोशिश का एक पहलू है शहरी क्षेत्रों में रहना। शहरी जीवन का सबसे ज़्यादा आकर्षक पहलू है बिजली जिससे काम के घंटे बढ़ जाते हैं और हम अतिरिक्त धन कमा सकते हैं। लेकिन मूलभूत सुविधाओं की हालत खस्ता है और हमारे इलाकों की हालत खराब है। केरल में शहरी सेवाएं भारत से बाहर रहने वालों की बदौलत रियायती दर पर दी जाती हैं। लेकिन ज़्यादातर अन्य राज्यों में ऐसा नहीं होता। यूएसएड के इंदौर (भारत का एक महंगा शहर) में प्रयासों का विस्तार के साथ अध्ययन होना चाहिए जिससे कि अन्य शहरों में भी यह मॉडल अपनाया जा सके जिनके लिए इसी तरह की वित्तीय मदद उपलब्ध है।